संवाद

संविधान के अंतर्गत धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर सबको समानता का अधिकार दिया गया है। महिलाओं की स्थिति में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् काफी बदलाव आया है। उनकी साक्षरता दर बढ़ी है। विभिन्न कार्य क्षेत्रों में महिलाएँ अपना योगदान कर रही हैं और यह साबित कर रही हैं कि यदि उन्हें मौका दिया जाए तो वे भी हर चुनौती का सामना कर सकती हैं। लेकिन आए दिन समाचार पत्रों, दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार- जिसमें घरेलू हिंसा, बलात्कार आदि सभी तरह की घटनाएँ शामिल हैं यह सोचने पर विवश करती हैं कि क्या आज़ादी के इतने वर्ष बीतने के बाद भी हमारे देश की महिलाएँ वास्तव में आज़ाद हैं? क्या घर के भीतर और बाहर निकलने पर भी वे स्वयं को सुरक्षित महसूस करती हैं? यहीं पर एक बात बार-बार मन में उठती है कि यदि बचपन से ही लड़कों को यह संस्कार दे दिए जाएँ कि लड़कियों को चाहे वे उनकी बहन हो या सहपाठी, सम्मान की नज़रों से देखें, उनका आदर करना सीखें तो शायद वे महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण लेकर विकसित होंगे और बड़े होकर वे भी महिलाओं का सम्मान करना सीखेंगे। इस काम में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और जब भी हम शिक्षा की बात करते हैं तो हमारे शिक्षक साथियों का ज़िक्र आना स्वाभाविक है। प्राथमिक शिक्षक पत्रिका का यह अंक बालिका शिक्षा को समर्पित है। हमारी आज़ादी की लड़ाई में कई महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अग्रणी भूमिका निभाई। इस अंक में आप लेख- लाईं जो बदलाव तथा बालिकाओं की प्रेरणा स्रोत के अंतर्गत ऐसी ही कई महिलाओं के बारे में पढ़ेंगे।

शिक्षक यदि कक्षा में बालक-बालिका दोनों पर समान रूप से से ध्यान दें, उन्हें बराबर अवसर दें तो शारीरिक चुनौती का सामना भी बालिकाएँ हिम्मत से करती हैं। दो संभावनाएँ के अंतर्गत ऐसी ही दो बालिकाओं के आत्मविश्वास को दर्शाया गया है। यदि घर में भी लड़की की परवरिश में कहीं कोई कमी रह जाती है जिसकी वजह से उसके आत्मविश्वास में भी धीरे-धीरे कमी आने लगती है तो शिक्षक उसमें आत्मविश्वास पुनः जाग्रत कर सकता है। कैसे? जानने के लिए पढ़िए एक अनुभव- आशा आज भी नहीं आयी।

घर और बाहर दोनों की ही ज़िम्मेदारी है कि बच्चे चाहे वह लड़का हो या लड़की को स्वयं अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाना। यदि वह यौन शोषण के शिकार हो गए हैं तो

उन्हें उबारने में मदद करना। इसी संबंध में जानकारी दे रहा है लेख – 'बाल यौन शोषण: मिथक एवं वास्तविकता।'

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलायी जा रही हैं। इन्हीं में से एक है – 'मिड-डे-मील।' इसी योजना के माध्यम से किस प्रकार भूगोल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है, यह आप जान सकेंगे इस अंक के लेख के माध्यम से मिड-डे-मील एवं भूगोल का पठन-पाठन-एक अध्ययन ।

पाठ्यपुस्तकों में निहित रचनाओं, अभ्यासों और गतिविधियों के द्वारा बच्चों में बड़ी सरलता से यह भावना जाग्रत की जा सकती है कि महिलाएँ भी किसी से कम नहीं हैं और घर का कामकाज़ घर के हर सदस्य की ज़िम्मेदारी है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर संवेदनशीलता के विकास का समुचित रूप से ध्यान रखा गया है। प्राथमिक शिक्षक *पत्रिका के इस अंक में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित प्राथमिक स्तर की हिंदी और पर्यायवरण अध्ययन की पुस्तकों में जेंडर संवेदनशीलता किस प्रकार समाहित है, इस संबंध में जानकारी दी जा रही है।*

दो अक्तूबर को हम गांधी जयंती मनाते हैं। इसी उपलक्ष्य में इस अंक में 'पुस्तक के पन्नों से' स्तंभ के अंतर्गत परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बहुरूप गांधी' से कुछ अंश दिए जा रहे हैं, जिनसे गांधी जी के व्यक्तित्व के कई पक्षों के बारे में जानकारी आपको मिलेगी। इन पहलुओं के बारे में बच्चों से भी बातचीत करें कि किस प्रकार गांधी जी की दृष्टि में कोई भी कार्य हेय नहीं था और वे अपने कार्य स्वयं करते थे।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक हमारे शिक्षक साथियों को जेंडर के मुद्दे के प्रति संवेदनशील बनाएगा तथा उनकी कक्षा का हर बालक अपने मन और मस्तिष्क में महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना लेकर ही बड़ा होगा तथा एक स्वस्थ समाज के निर्माण में भागीदार बनेगा। साथ ही हर बालिका आत्मविश्वास से युक्त होकर विद्यालयी शिक्षा पूरी करेगी और समाज के विकास में वह अहम भूमिका निभाएगी।

अकादमिक संपादक